an>

Title: Need to honour the soldiers of Sindhudurg-Ratnagiri in Maharashtra who took part in First World War.

श्री विनायक भाऊराव राऊत (रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग) : अध्यक्ष महोदया, वÂर्ष 1914 से 1919 तक प्रथम विश्व युद्ध हुआ। प्रथम विश्व युद्ध में भारत के कई राज्यों से लाखों की संख्या में नागरिक विश्व युद्ध में शामिल होने के लिए गए थे। महाराÂष्ट्र के रत्नागिरी जिले से भी सैंकड़ों की संख्या में लोग विश्व युद्ध में शामिल होने के लिए गए थे। खासकर रत्नागिरी जिले जो वर्तमान सिंधुदुर्ग जिले है वहां सातंवाड़ी मोहल्ले से कलबिकेश जवान 67, कनकौली मोहल्ला के 52 जवान हैं, कुडाल शूमबल के 52 जवान हैं और सालगांव के 57 जवान हैं। उस वक्त के रत्नागिरी जिले से 288 नागरिक गए थे उसमें से 214 वापिस आए थे और 14 जवान वहां शहीद हुए थे।

अध्यक्ष महोदया, उस वक्त पूरे देश से लाखों जवान वहां लड़ने गए थे वहां उसने जबर्दस्त शौर्य दिखाया था इसका अभिमान सभी भारतियों को है। मेरी एक प्रार्थना है कि जो जवान शहीद हुए या जो शामिल हुए उनके परिवारों के बारे में ब्रिटिश की महारानी ने खुद के हस्ताक्षर से खत लिखा था और उनका सम्मान किया था। जो जवान शहीद हुआ और जो जवान वहां लड़ने गए थे उनके आज भी हरेक गांव में एक-एक मेमोरियल तैयार किया हुआ था लेकिन उसकी आज स्थिति बहुत ही खराब है, उस तरफ आज कोई नहीं देखता। मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार और रक्षा मंत्रालय की जानकारी यह बात लाना चाहता हूं। जिस युद्ध विश्व युद्ध में भारतीय जवान और खासकर रत्नागिरी -सिन्धुदुर्ग के जवान शहीद हुए थे या शामिल हुए थे उनके सम्मान के लिए सही तरीके से कुछ प्रावधान करना चाहिए। जहां भी उनके मेमोरियल बने हुए हैं उसकी देखरेख और निगरानी के लिए सही निधि का प्रावधान करना चाहिए। राज्य सरकार को जिला पूशासन को सूचना देना चाहिए और इन शहीदों का सम्मान करना चाहिए। यही मेरी विनती है।

माननीय अध्यक्ष :

श्री भैरों पूसाद मिश्र,

श्री रोड़मल नागर,

श्री चन्द्र पूकाश जोशी और

श्री कुँवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल को श्री विनायक भाऊराव राऊत द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति पूदान की जाती है।